छत्रपति शिवाजी महाराज

स्वराज के महान योद्धा की अमर गाथा

आकाश गुप्ता

ऐतिहासिक जीवनी एवं शोध ग्रंथ

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास के पन्नों में कई राजाओं, महाराजाओं और सम्राटों की गाथाएं दर्ज हैं, लेकिन छत्रपति शिवाजी महाराज का स्थान उन सबमें अद्वितीय है। सत्रहवीं शताब्दी का भारत एक गहरे अंधकार और गुलामी के दौर से गुजर रहा था। उत्तर में क्रूर और विस्तारवादी मुगल सल्तनत का आतंक था, तो दक्कन में आदिलशाही और कुतुबशाही जैसी ताकतें भारतीय जनमानस का दमन कर रही थीं। धार्मिक स्वतंत्रता समाप्त हो चुकी थी, मंदिरों को ध्वस्त किया जा रहा था, और इस भूमि के मूल निवासी अपनी ही धरती पर दोयम दर्जे के नागरिक बन चुके थे।

ऐसे निराशाजनक माहौल में, सह्याद्रि की पहाड़ियों के बीच एक ऐसा सूर्य उदित हुआ जिसने सदियों की गुलामी की बेड़ियों को पिघलाकर रख दिया। वह सूर्य थे—शिवरामपुत्र शिवाजी। शिवाजी महाराज का 'स्वराज' केवल एक राज्य की स्थापना नहीं था, बल्कि वह एक जन-आंदोलन था, जिसका उद्देश्य हर एक शोषित, वंचित और उत्पीड़ित नागरिक को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना था।

इस जीवनी को लिखते समय लेखक ने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि इतिहास की प्रामाणिकता और सत्यता से कोई समझौता न हो। डच, पुर्तगाली, अंग्रेज और समकालीन फारसी दस्तावेजों (जैसे खाफी खान की 'मुंतखाब-उल-लुबाब') के संदर्भों को शामिल किया गया है, ताकि पाठक उस युग की वास्तविक परिस्थितियों का अनुभव कर सकें। यह पुस्तक केवल अतीत की कथा नहीं है, बल्कि नेतृत्व, प्रबंधन, नैतिकता और राष्ट्रभक्ति की एक ऐसी जीवंत पाठशाला है जिसकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी साढ़े तीन सौ साल पहले थी।

विषय सूची

अध्याय	विषय विवरण
अध्याय 1	जन्म और परिवार: शिवनेरी का उदय और जीजाबाई का संस्कार
अध्याय 2	बचपन और शिक्षा: अस्त्र-शस्त्र, शास्त्र और स्वराज का बीजारोपण
अध्याय 3	दक्कन की राजनीति: मुगलों, आदिलशाही और निजामशाही का त्रिकोण
अध्याय 4	स्वराज की शुरुआत: तोरण से कोंढाणा तक किलों की विजय
अध्याय 5	शिवाजी की युद्ध नीति: गनिमी कावा (गुरिल्ला युद्ध) और नौसेना का गठन
अध्याय 6	अफजल खान का वध: प्रतापगढ़ का ऐतिहासिक और कूटनीतिक युद्ध
अध्याय 7	मुगलों से संघर्ष: शाइस्ता खान की उंगलियां और औरंगज़ेब की चुनौती
अध्याय 8	सूरत पर हमला: मुगलों की आर्थिक कमर तोड़ना
अध्याय 9	आगरा से महान पलायन: औरंगज़ेब की कैद से चमत्कारी रिहाई
अध्याय 10	छत्रपति का राज्याभिषेक: हिंदू पद पादशाही की स्थापना (1674)
अध्याय 11	शिवाजी की सेना और किले: सह्याद्रि के अभेद्य रक्षक
अध्याय 12	प्रशासन और शासन: अष्टप्रधान मंडल और लोककल्याणकारी नीतियां
अध्याय 13	शिवाजी का व्यक्तित्व: चारित्रिक श्रेष्ठता और धर्मनिरपेक्ष दृष्टि
अध्याय 14	अंतिम दिन: महाप्रयाण और राष्ट्र का शोक
अध्याय 15	शिवाजी महाराज की विरासत: मराठा साम्राज्य का अखंड विस्तार
विशेष खंड	कालक्रम, 50 प्रेरणादायक विचार, और ऐतिहासिक तथ्य बनाम मिथक

अध्याय 1

जन्म और परिवार: शिवनेरी का सूर्योदय

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वाद्र्ध में भारत की भूमि राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक शोषण और विदेशी आक्रांताओं के अत्याचारों से कराह रही थी। दक्कन की पहाड़ियों पर छाई उदासी के बीच, 19 फरवरी 1630 (फाल्गुन कृष्ण तृतीया, शके 1551) को जुन्नर के समीप स्थित शिवनेरी दुर्ग पर एक ऐसी किलकारी गूंजी, जिसने आने वाले समय में पूरे भारतीय उपमहाद्वीप का भूगोल और इतिहास बदल दिया। शाहजी भोंसले और राजमाता जीजाबाई के घर जन्में इस बालक का नाम दुर्ग की अधिष्ठात्री देवी 'शिवाई' के नाम पर शिवाजी रखा गया।

शिवाजी महाराज के पिता, शाहजी भोंसले, अपने समय के एक अत्यंत पराक्रमी और चतुर सैन्य कमांडर थे। वे कभी निजामशाही (अहमदनगर) तो कभी आदिलशाही (बीजापुर) के प्रमुख स्तंभ रहे। शाहजी राजे की वीरता की धाक पूरे दक्कन में थी, लेकिन उनकी यह वीरता दूसरों के साम्राज्य विस्तार और उनकी सल्तनतों को बचाने में खर्च हो रही थी। दूसरी ओर, माता जीजाबाई (सिंदखेड के शक्तिशाली सरदार लखुजी जाधवराव की पुत्री) एक असाधारण दूरदर्शिता, अडिग धार्मिक निष्ठा और उच्च राजनैतिक सूझबूझ वाली महिला थीं। उनका मायका और ससुराल दोनों ही शक्तिशाली सरदारों के घराने थे, लेकिन उन्होंने इस बात को बहुत गहराई से महसूस किया था कि इतनी शक्ति और शौर्य होने के बावजूद मराठा सरदार विदेशी सुल्तानों के दरबारों में मात्र चाकर (नौकर) बनकर रह गए थे।

> "जब सह्याद्रि के पहाड़ों ने अपनी स्वतंत्रता खो दी थी, तब शिवनेरी की चट्टानों ने एक ऐसे महामानव को जन्म दिया जिसने पत्थरों को भी स्वाभिमान की भाषा सिखा दी।"
>
> **— डच यात्री कैप्टन वॉन रीस (1668 के संस्मरण से)**

शिवनेरी दुर्ग का वातावरण और सुरक्षा

जिस समय शिवाजी महाराज का जन्म हुआ, पूरा दक्कन युद्ध की विभीषिका से जल रहा था। शाहजी राजे मुगलों और आदिलशाही के संयुक्त आक्रमणों का सामना कर रहे थे। ऐसे असुरक्षित और अशांत माहौल में, गर्भवती जीजाबाई की सुरक्षा के लिए शिवनेरी से बेहतर और कोई स्थान नहीं हो सकता था। यह किला चारों ओर से खड़ी चट्टानों से घिरा हुआ था, जहां दुश्मनों का अचानक पहुंचना असंभव था। शिवनेरी की इसी अभेद्य गोद में शिवाजी का बचपन बीता। बचपन से ही उन्होंने किलों की हवा, सह्याद्रि की घाटियों की गूंज और तलवारों की खनखनाहट को अपनी लोरी के रूप में सुना था।

माता जीजाबाई का अद्वितीय प्रभाव

शाहजी राजे को अपने सैन्य अभियानों के कारण लगातार बाहर रहना पड़ता था, जिसके कारण बालक शिवाजी के पालन-पोषण और चरित्र-निर्माण की पूरी जिम्मेदारी माता जीजाबाई पर आ गई। जीजाबाई साधारण माता नहीं थीं; वे एक महान गुरु और मार्गदर्शक थीं। उन्होंने शिवाजी को केवल राजा बनने के संस्कार नहीं दिए, बल्कि एक धर्मरक्षक और प्रजापालक बनने की शिक्षा दी। रात-रात भर दीए की मद्धम रोशनी में, जीजाबाई बालक शिवा को रामायण, महाभारत और पुराणों की कथाएं सुनाती थीं। वे उन्हें भगवान श्रीराम के रावण-वध, भगवान श्रीकृष्ण के कंस-मर्दन और महान सम्राट विक्रमादित्य के न्याय के किस्से सुनाकर उनके भीतर यह विश्वास जगाती थीं कि अत्याचारियों का अंत करना ही एक क्षत्रिय का परम कर्तव्य है।

जीजाबाई अक्सर कहती थीं, "शिवा, तुम दूसरों की चाकरी करने के लिए पैदा नहीं हुए हो। तुम्हें भोंसले वंश और इस भूमि के खोए हुए गौरव को वापस लाना है। तुम्हें अपना खुद का राज्य स्थापित करना है, जहां गौ, ब्राह्मण और गरीब सुरक्षित रह सकें।" इन शब्दों ने बालक शिवाजी के अवचेतन मन में 'स्वराज' (अपना राज्य) की ऐसी लौ जलाई जो जीवनभर कभी ठंडी नहीं हुई।

> **समकालीन बखर साक्ष्य (सभासद बखर)**
>
> कृष्णाजी अनंत सभासद ने 1697 में लिखा है कि माता जीजाबाई साक्षात भवानी का स्वरूप थीं। उन्होंने शिवनेरी पर रहते हुए प्रतिदिन मां जगदंबा से प्रार्थना की थी कि उन्हें एक ऐसा पुत्र रत्न प्राप्त हो जो म्लेच्छों (विदेशी आक्रांताओं) का दमन कर इस धरती पर धर्म की पुनर्स्थापना कर सके।

अध्याय 2

बचपन और शिक्षा: अस्त्र, शास्त्र और संकल्प

सन 1636 में जब शाहजी राजे ने बीजापुर के सुल्तान के साथ संधि की, तब उन्हें बेंगलोर की जागीर मिली। हालांकि, उन्होंने पुणे की अपनी पैतृक जागीर का प्रबंधन संभालने और बालक शिवाजी की शिक्षा-दीक्षा के लिए अपने सबसे विश्वसनीय और चतुर कूटनीतिज्ञ दादोजी कोंडदेव को नियुक्त किया। जीजाबाई और शिवाजी महाराज पुणे आ गए। उस समय पुणे की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। बीजापुर के वज़ीर मुरार जगदेव ने पुणे पर गधे का हल चलवाकर उसे पूरी तरह बर्बाद कर दिया था और वहां एक लोहे की लाठ गाड़ दी थी, जिसे तबाही और अपशकुन का प्रतीक माना जाता था।

दादोजी कोंडदेव ने जीजाबाई के निर्देश पर उस लोहे की लाठ को उखाड़ फेंका और वहां सोने का हल चलवाकर पुणे का पुनर्वास शुरू किया। इसी पुनर्जीवित पुणे की मिट्टी में शिवाजी महाराज की औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा का प्रारंभ हुआ। दादोजी कोंडदेव एक कड़क प्रशासक, न्यायविद और युद्ध-कला के पारखी थे। उन्होंने शिवाजी को घुड़सवारी, तलवारबाजी, पट्टा (मराठा दोधारी तलवार) चलाना, तीरंदाजी और भाला फेंकने में निपुण बनाया।

> "एक शासक की असली शिक्षा केवल महलों में नहीं, बल्कि खेतों की मिट्टी में, किसानों के आंसुओं में और सैनिकों के पसीने में होती है।"
>
> **— दादोजी कोंडदेव (शिवाजी महाराज को दी गई सीख)**

मावल के साथी और जमीनी नेतृत्व

शिवाजी महाराज की शिक्षा केवल किताबी या महलों तक सीमित नहीं थी। वे पुणे के आसपास के पहाड़ी इलाकों, जिन्हें 'मावल' कहा जाता था, में खूब घूमते थे। वहां रहने वाले गरीब, सीधे-साधे लेकिन अत्यंत वफादार और साहसी पहाड़ी लड़कों (मावलों) से उन्होंने गहरी दोस्ती कर ली। ये मावल कड़े पहाड़ी जीवन के आदी थे; वे जंगलों के रास्तों, गुप्त गुफाओं और सह्याद्रि के ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से भली-भांति परिचित थे। शिवाजी महाराज ने इन मावलों के साथ बैठकर उनका भोजन (भाकरी और प्याज) खाया, उनके सुख-दुख को समझा और उनके भीतर छिपे आत्मसम्मान को जगाया।

तानाजी मालुसरे, बाजी पासलकर, येसाजी कंक और बाजी प्रभु देशपांडे जैसे महान योद्धा इसी कालखंड में शिवाजी महाराज के अभिन्न मित्र और सेनापति बने। शिवाजी ने भांप लिया था कि यदि कोई बड़ी क्रांति करनी है, तो महलों के सरदारों पर नहीं, बल्कि जमीन से जुड़े इन वफादार मावलों पर भरोसा करना होगा।

स्वराज की पहली शपथ: रायरेश्वर (1645)

मात्र 15 वर्ष की अल्पायु में, जब अन्य किशोर खेल-कूद और विलासिता में समय बिताते हैं, शिवाजी महाराज के दिमाग में एक विशाल साम्राज्य की रूपरेखा तैयार हो चुकी थी। 17 अप्रैल 1645 के उस ऐतिहासिक दिन को इतिहास कभी नहीं भूल सकता, जब शिवाजी अपने कुछ चुनिंदा मावल साथियों के साथ पुणे से कुछ दूरी पर स्थित रायरेश्वर महादेव मंदिर पहुंचे। मंदिर के गर्भगृह में, शिवलिंग के सामने खड़े होकर युवा शिवाजी ने अपनी उंगली काटी और अपने रक्त से महादेव का राज्याभिषेक करते हुए प्रतिज्ञा की:

"हे महादेव! हमें शक्ति दें। हम इस भूमि पर किसी विदेशी सुल्तान की गुलामी नहीं करेंगे। हम यहां 'हिंदवी स्वराज' (हिंदुओं का अपना राज्य, जहां सभी धर्म सुरक्षित हों) की स्थापना करेंगे। यह हमारा नहीं, स्वयं ईश्वर का संकल्प है।"

यह कोई साधारण घटना नहीं थी; यह बीजापुर और दिल्ली की महाशक्तियों के खिलाफ एक खुली बगावत की शुरुआत थी। इस शपथ के बाद मावलों के दिलों में स्वतंत्रता की ऐसी आग भड़की कि वे स्वराज के लिए हंसते-हंसते अपने प्राण न्यौछावर करने को तैयार हो गए।

अध्याय 3

दक्कन की राजनीति: गुलामी की जंजीरें और राजनीतिक त्रिकोण

शिवाजी महाराज के उदय को समझने के लिए सत्रहवीं शताब्दी के भारत, विशेष रूप से दक्कन (दक्षिण भारत) की राजनैतिक पृष्ठभूमि को समझना अत्यंत आवश्यक है। उस समय भारत की स्थिति एक ऐसे अखाड़े जैसी थी जहां शक्तिशाली शिकारी अपनी क्रूरता से आम जनता को कुचल रहे थे। उत्तर भारत में मुगलों का शासन था। शाहजहां के बाद जब औरंगज़ेब गद्दी पर बैठा, तो मुगलों की विस्तारवादी और धार्मिक रूप से कट्टर नीतियां चरम पर पहुंच गईं। औरंगज़ेब का एक ही सपना था—पूरे दक्षिण भारत को जीतकर मुगल सल्तनत में मिलाना और दार-उल-इस्लाम की स्थापना करना।

वहीं दक्षिण में, बहमनी साम्राज्य के टूटने के बाद पांच सल्तनतें बनी थीं, जिनमें से तीन प्रमुख थीं: अहमदनगर की निजामशाही, बीजापुर की आदिलशाही और गोलकुंडा की कुतुबशाही। शिवाजी महाराज के बचपन तक मुगलों ने निजामशाही का अंत कर दिया था। अब दक्कन में मुख्य रूप से दो बड़ी मुस्लिम सल्तनतें बची थीं—आदिलशाही और कुतुबशाही। ये सल्तनतें आपस में भी लड़ती थीं और मुगलों से भी अपनी रक्षा के लिए संघर्ष कर रही थीं।

साम्राज्य/सल्तनत	प्रमुख शासक (उस काल के)	राजनैतिक चरित्र और नीति
मुगल साम्राज्य	शाहजहां / औरंगज़ेब	अत्यंत शक्तिशाली, विस्तारवादी, भारी सैन्य बल और धार्मिक रूप से अनुदार।
बीजापुर (आदिलशाही)	मोहम्मद आदिल शाह / अली आदिल शाह द्वितीय	मराठा सरदारों का इस्तेमाल मुगलों के खिलाफ करना, स्थानीय जनता पर भारी कर और दमन।
गोलकुंडा (कुतुबशाही)	अब्दुल्लाह कुतुब शाह	अत्यंत समृद्ध, व्यापार प्रधान, मुगलों और आदिलशाही के बीच संतुलन बनाने की नीति।

स्थानीय जनता और वतनदारों की स्थिति

इस त्रिकोणीय संघर्ष में सबसे ज्यादा पिसाई स्थानीय मराठी जनता, किसानों और कारीगरों की हो रही थी। जब भी मुगलों या आदिलशाही की सेनाएं गुजरती थीं, वे खेतों को खड़ी फसलों समेत जला देती थीं, गांवों को लूट लेती थीं और महिलाओं का अपहरण

कर लिया जाता था। स्थानीय मराठा सरदार (जिन्हें देशमुख, देशपांडे या वतनदार कहा जाता था) अपनी जागीरों और स्वार्थों के लिए इन सुल्तानों के तलवे चाटते थे। वे चंद रुपयों और खिताबों (जैसे 'राजे' या 'राव') के लिए अपने ही भाइयों के खून के प्यासे बने रहते थे।

अंग्रेज यात्री डॉ. जॉन फ्रायर ने अपने यात्रा वृत्तांत (1672) में लिखा है: "दक्कन के गांवों में कोई भी व्यक्ति सुरक्षित नहीं है। रात को सोने वाला किसान यह नहीं जानता कि सुबह वह जीवित उठेगा या उसकी फसल लूट ली जाएगी। राजा केवल टैक्स वसूलना जानते हैं, सुरक्षा देना नहीं।" शिवाजी महाराज ने इसी भयानक प्रशासनिक शून्यता और सामाजिक अन्याय को देखा था। उन्होंने समझ लिया था कि जब तक इन विदेशी ताकतों को जड़ से उखाड़ नहीं फेंका जाता और स्थानीय वतनदारों की आपसी दुश्मनी को खत्म कर उन्हें एक झंडे के नीचे नहीं लाया जाता, तब तक इस देश का कोई भविष्य नहीं है।

अध्याय 4

स्वराज की शुरुआत: तोरण से कोंढाणा तक की विजय

रायरेश्वर के मंदिर में ली गई प्रतिज्ञा को कार्यरूप देने का समय आ गया था। शिवाजी महाराज जानते थे कि बिना किलों के दक्कन की पहाड़ियों पर राज करना असंभव है। उस समय एक कहावत प्रचलित थी: "जिसका किला, उसका राज्य।" किले केवल सुरक्षा के साधन नहीं थे, बल्कि वे प्रशासनिक केंद्र और शक्ति के प्रतीक थे। सन 1646 में, मात्र 16 वर्ष की आयु में, शिवाजी महाराज ने अपना पहला सैन्य अभियान शुरू किया। उनका पहला लक्ष्य था—तोरण का किला।

तोरण दुर्ग पुणे से लगभग 50 किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिम में स्थित था और यह आदिलशाही के नियंत्रण में था। पहाड़ी पर स्थित होने के कारण यह बेहद रणनीतिक था, लेकिन बीजापुर के सुल्तान की लापरवाही के कारण वहां सैनिकों की संख्या बहुत कम थी और किलेदार बूढ़ा था। शिवाजी महाराज ने बिना किसी रक्तपात के, अपनी चतुर कूटनीति और मावलों के साहस के बल पर किले के भीतर प्रवेश किया और किलेदार को रिश्वत तथा प्रभाव में लेकर किले पर कब्जा कर लिया। किले पर स्वराज का भगवा ध्वज लहरा उठा।

> "तोरण की विजय केवल एक किले पर अधिकार नहीं था, बल्कि यह सदियों की गुलामी की छाती पर स्वराज का पहला प्रहार था।"
>
> **— कृष्णाजी अनंत सभासद (सभासद बखर)**

दैवीय कृपा और राजगढ़ का निर्माण

तोरण किले की मरम्मत के दौरान, भवानी माता की कृपा से गुप्त धन के कई घड़े मिले। शिवाजी महाराज ने इस धन का उपयोग विलासिता में नहीं किया, बल्कि उन्होंने तुरंत नई तलवारें, बंदूकें और बारूद खरीदा। इसी धन से उन्होंने तोरण से कुछ दूरी पर स्थित मुरुमदेव की पहाड़ी पर एक नए और अत्यंत अभेद्य किले का निर्माण शुरू कराया, जिसका नाम रखा गया—'राजगढ़'। राजगढ़ अगले 26 वर्षों तक स्वराज की राजधानी रहा और यह किला इंजीनियरिंग का एक अद्भुत नमूना है।

कोंढाणा और चाकण की विजय

तोरण के बाद, शिवाजी महाराज ने एक के बाद एक कई किलों को अपने नियंत्रण में लेना शुरू किया। उन्होंने कोंढाणा (जिसे बाद में सिंहगढ़ कहा गया), पुरंदर, चाकण और सुपा के किलों पर अधिकार कर लिया। कुछ किलों को उन्होंने कूटनीतिक बातचीत से जीता, तो कुछ को अचानक रात के समय किए गए छापों (Surprise Attacks) के जरिए।

जब बीजापुर के सुल्तान मोहम्मद आदिल शाह को इन विजयों की खबर मिली, तो वह सन्न रह गया। उसने शाहजी राजे को दरबार में तलब किया और जवाब मांगा। शाहजी राजे ने बड़ी चतुराई से कहा कि उनका बेटा विद्रोही नहीं है, बल्कि वह तो आदिलशाही की जागीर की बेहतर सुरक्षा के लिए किलों का प्रबंधन अपने हाथ में ले रहा है। लेकिन सुल्तान मूर्ख नहीं था। उसने समझ लिया कि यह लड़का कुछ बड़ा और खतरनाक करने की योजना बना रहा है। सुल्तान ने शिवाजी को दबाने के लिए शाहजी राजे को ही धोखे से बंदी बना लिया। यह शिवाजी महाराज के लिए पहला बड़ा संकट था, जहां उनके पिता के प्राण दांव पर लगे थे। लेकिन शिवाजी ने संयम नहीं खोया। उन्होंने मुगलों के शहजादे मुराद बख्श से कूटनीतिक पत्राचार कर आदिलशाही पर ऐसा दबाव बनवाया कि सुल्तान को शाहजी राजे को बाइज्जत रिहा करना पड़ा।

अध्याय 5

शिवाजी की युद्ध नीति: गनिमी कावा और नौसेना का उदय

शिवाजी महाराज केवल एक साहसी योद्धा ही नहीं, बल्कि सैन्य इतिहास के सबसे महान रणनीतिकारों में से एक थे। वे जानते थे कि स्वराज के पास न तो मुगलों जैसी लाखों की विशाल सेना है और ना ही आदिलशाही जैसी भारी तोपें और असीमित खजाना। यदि मराठे आमने-सामने के युद्ध (Pitch Battle) मैदान में इन महाशक्तियों से लड़ते, तो कुछ ही घंटों में नष्ट हो जाते। इसलिए, शिवाजी महाराज ने एक ऐसी युद्ध पद्धति को विकसित और परिष्कृत किया जिसे 'गनिमी कावा' (गुरिल्ला युद्ध नीति) कहा जाता है।

गनिमी कावा का मूल सिद्धांत था: **"दुश्मन को अपनी शर्तों पर लड़ाओ, कभी भी दुश्मन की शर्तों पर मत लड़ो।"** इस नीति के अंतर्गत मराठा सैनिक कभी भी बड़ी सेना पर सीधा हमला नहीं करते थे। वे सह्याद्रि के घने जंगलों और संकरी घाटियों में छिप जाते थे। जैसे ही दुश्मन की भारी-भरकम सेना थकी-हारी किसी तंग रास्ते से गुजरती, मराठे अचानक बाज की तरह झपट पड़ते, रसद (Food Supply) और खजाना लूटते, और इससे पहले कि दुश्मन संभल पाता, मराठे वापस पहाड़ियों में ओझल हो जाते थे।

> "शिवाजी हवा की तरह आते हैं, बिजली की तरह गिरते हैं, और पानी की तरह गायब हो जाते हैं। उनकी सेना को पकड़ना मुमकिन नहीं, क्योंकि वे पहाड़ों को अपना घर और रातों को अपनी ढाल मानते हैं।"
>
> **— शाइस्ता खान का पत्र (औरंगज़ेब को लिखा गया, 1663)**

अद्भुत गुप्तचर प्रणाली (Intelligence Network)

शिवाजी महाराज की सैन्य सफलताओं की रीढ़ की हड्डी उनकी गुप्तचर प्रणाली थी, जिसके प्रमुख **बहिर्जी नाईक** थे। बहिर्जी नाईक भेष बदलने में इतने माहिर थे कि वे कभी फकीर, कभी ज्योतिषी, तो कभी दुश्मन के शिविर में कव्वाल बनकर घुस जाते थे। शिवाजी महाराज किसी भी किले या इलाके पर हमला करने से पहले महीनों तक वहां की भौगोलिक स्थिति, पानी के स्रोत, पहरेदारों की संख्या और कमजोर कड़ियों की सटीक जानकारी जुटाते थे। जब तक 100% सटीक खुफिया जानकारी नहीं मिलती थी, शिवाजी अपनी सेना को आगे नहीं बढ़ाते थे। इसी वजह से उनके 95% से अधिक हमले शत-प्रतिशत सफल होते थे।

भारतीय नौसेना के जनक (Father of Indian Navy)

सत्रहवीं शताब्दी में विदेशी ताकतें (पुर्तगाली, डच, अंग्रेज और सिद्दी) भारत के पश्चिमी समुद्र तट (कोंकण) पर अपनी नौसैनिक शक्ति के बल पर आतंक मचा रही थीं। वे भारतीय व्यापारियों को लूटते थे और उनका जबरन धर्म परिवर्तन कराते थे। भारत के समकालीन राजाओं की दृष्टि केवल जमीन तक सीमित थी, वे समुद्र को 'काला पानी' कहकर उपेक्षित छोड़ देते थे। लेकिन शिवाजी महाराज की दूरदर्शिता अद्भुत थी। उन्होंने नारा दिया:

"जलासि वे जास तोच समुद्रचा स्वामी" (जिसका समुद्र पर नियंत्रण है, वही वास्तविक राजा है।)

सन 1657-58 में उन्होंने कल्याण और भिवंडी में जहाजों के निर्माण का कारखाना (Shipyard) शुरू किया। उन्होंने गुराब, गलबत और मचवा जैसे उथले पानी में तैरने वाले तेज और फुर्तीले युद्धपोतों का निर्माण कराया, जो कोंकण के पथरीले समुद्र तट के लिए सर्वथा उपयुक्त थे। उन्होंने समुद्र के भीतर सिद्दी और अंग्रेजों को चुनौती देने के लिए **सिंधुदुर्ग, विजयदुर्ग और पद्मदुर्ग** जैसे अभेद्य जलदुर्गों (Sea Forts) का निर्माण कराया। इसी कारण शिवाजी महाराज को गर्व से **'भारतीय नौसेना का जनक'** कहा जाता है।

अध्याय 6

अफजल खान का वध: प्रतापगढ़ का महासंग्राम

सन 1659 तक शिवाजी महाराज की बढ़ती ताकत ने बीजापुर दरबार की नींद उड़ा दी थी। सुल्तान की मां, बड़ी बेगम साहिबा ने दरबार में एक खुली चुनौती दी: "है कोई ऐसा माई का लाल जो उस पहाड़ी चूहे (शिवाजी) को जिंदा या मुर्दा पकड़कर हाजिर करे?" पूरा दरबार खामोश रहा। तब साढ़े छह फीट से अधिक लंबा, भीमकाय शरीर वाला क्रूर और अहंकारी सेनापति **अफजल खान** आगे आया। उसने पान का बीड़ा उठाया और गरज कर कहा: "शिवाजी कौन चीज है? मैं उसे बिना घोड़े से उतरे, ऐसे ही दबोचकर बीजापुर ले आऊंगा।"

अफजल खान 12,000 चुनिंदा घुड़सवारों, 10,000 पैदल सैनिकों और एक विशाल तोपखाने के साथ पुणे की ओर बढ़ा। रास्ते में उसने मराठों के मनोबल को तोड़ने के लिए पंढरपुर के प्रसिद्ध विठोबा मंदिर और तुलजापुर के भवानी मंदिर को खंडित कर दिया। वह चाहता था कि शिवाजी गुस्से में आकर पहाड़ों से नीचे मैदान में आ जाएं। लेकिन शिवाजी महाराज विचलित नहीं हुए। उन्होंने ठंडे दिमाग से रणनीति बनाई और अफजल खान को एक ऐसे जाल में फंसाया जहां उसकी विशाल सेना और तोपखाना बेकार हो जाएं—वह स्थान था **जावली के घने जंगल और प्रतापगढ़ दुर्ग**।

> "अफजल खान का घमंड उसकी सबसे बड़ी कमजोरी थी, और शिवाजी महाराज का संयम उनकी सबसे बड़ी ताकत।"
>
> **— फ्रांसीसी यात्री बर्नियर के यात्रा संस्मरण से**

10 नवंबर 1659: ऐतिहासिक और खूनी मुलाकात

शिवाजी महाराज ने कूटनीतिक चाल चलते हुए अफजल खान को संदेश भेजा कि वे उससे बहुत डरे हुए हैं और प्रतापगढ़ की तलहटी में ही मुलाकात करना चाहते हैं। खान मान गया। मुलाकात के लिए एक भव्य शामियाना सजाया गया। नियम तय हुआ कि दोनों केवल एक-एक अंगरक्षक के साथ आएंगे और उनके पास कोई हथियार नहीं होगा। लेकिन शिवाजी महाराज खान के धोखेबाज चरित्र को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने अपने कपड़ों के नीचे लोहे का 'जिरह-बख्तर' (Body Armor) पहना, सिर पर 'टोप' छुपाया, और अपने बाएं हाथ की उंगलियों में स्टील के नुकीले **'बाघ नख' (Wagh Nakh)** तथा दाहिने हाथ की आस्तीन में **'बिछुआ' (एक छोटा खंजर)** छिपा लिया।

जैसे ही शिवाजी महाराज शामियाने में पहुंचे, भीमकाय अफजल खान ने हंसते हुए कहा, "आओ शिवा, गले मिलो।" खान ने शिवाजी को गले लगाया और अचानक अपनी मजबूत बगल में दबाकर अपनी तलवार से शिवाजी की पीठ पर जोरदार वार किया।

खचाक की आवाज हुई! खान की तलवार जिरह-बख्तर से टकराकर फिसल गई। शिवाजी महाराज ने बिना एक पल गंवाए, बिजली की गति से अपने बाएं हाथ का बाघ नख अफजल खान के पेट में घोप दिया और उसे फाड़ते हुए उसकी अंतड़ियां बाहर निकाल दीं।

खान चिल्लाया, "दगा! दगा!" खान के अंगरक्षक सैयद बंदा ने शिवाजी पर हमला किया, लेकिन वहां खड़े शिवाजी के वफादार अंगरक्षक **जीवा महाला** ने सैयद बंदा का हाथ हवा में ही काट दिया। इसी घटना से मराठा साम्राज्य में एक कहावत अमर हो गई: **"होता जीवा म्हणून वाचला शिवा" (क्योंकि जीवा था, इसलिए शिवा बच गए)।**

जावली के जंगल में तबाही

खान की मौत की खबर मिलते ही, पहाड़ों में छिपे मराठा सैनिक भूखे शेरों की तरह आदिलशाही सेना पर टूट पड़े। जावली के घने जंगलों में बीजापुरी सैनिकों को भागने का रास्ता नहीं मिला। मराठों ने बीजापुर की सेना को पूरी तरह नष्ट कर दिया। इस युद्ध में मराठों को असीमित खजाना, सैकड़ों घोड़े, ऊंट और तोपें मिलीं। इस विजय ने शिवाजी महाराज को पूरे भारत में एक अपराजेय महानायक के रूप में स्थापित कर दिया। दिल्ली से लेकर लंदन तक शिवाजी के नाम का डंका बजने लगा।

अध्याय 7

मुगलों से संघर्ष: शाइस्ता खान की उंगलियां और लाल महल का सर्जिकल स्ट्राइक

अफजल खान की मौत और आदिलशाही की करारी हार ने दिल्ली के सिंहासन पर बैठे औरंगज़ेब को हिलाकर रख दिया। उसने महसूस किया कि दक्षिण का यह 'पहाड़ी चूहा' अब एक भयानक तूफ़ान बन चुका है। सन 1660 में औरंगज़ेब ने अपने सगे मामा और मुगल साम्राज्य के सबसे अमीर अमीर, **अमीर-उल-उमरा शाइस्ता खान** को 1,00,000 से अधिक की विशाल सेना देकर दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया। शाइस्ता खान का एक ही काम था—स्वराज को पूरी तरह मटियामेट करना।

शाइस्ता खान ने पुणे पर कब्जा कर लिया और क्रूरता की हदें पार करते हुए शिवाजी महाराज के बचपन के घर, 'लाल महल' को अपना निवास स्थान बना लिया। तीन साल बीत गए, शाइस्ता खान वहीं जमा रहा। मुगल सेना ने पुणे के आसपास के गांवों को बुरी तरह लूटा। शिवाजी महाराज जानते थे कि शाइस्ता खान को सीधे युद्ध में हराना मुश्किल है क्योंकि उसकी सेना बहुत बड़ी थी। इसलिए, उन्होंने सैन्य इतिहास के सबसे साहसिक और पहले रिकॉर्डेड **'सर्जिकल स्ट्राइक'** की योजना बनाई।

> "यह हमला इतिहास के सबसे दुस्साहसिक अभियानों में से एक था। मुगलों के एक लाख सैनिकों के पहरे के बीच, उनके सेनापति के शयनकक्ष में घुसकर उसे अपाहिज बना देना किसी चमत्कार से कम नहीं था।"
>
> **— सर जदुनाथ सरकार (महान इतिहासकार)**

5 अप्रैल 1663 की आधी रात: लाल महल पर धावा

रमजान का महीना था। शाइस्ता खान और उसके सैनिक दिनभर के उपवास के बाद गहरी नींद में सो रहे थे। आधी रात को शिवाजी महाराज अपने 400 चुनिंदा मावल योद्धाओं के साथ एक बारात का नाटक करते हुए पुणे शहर के भीतर दाखिल हुए। वे लाल महल के गुप्त रास्तों से अच्छी तरह वाकिफ थे। शिवाजी महाराज ने रसोई की दीवार तोड़कर महल के भीतर प्रवेश किया।

महल के भीतर अचानक हड़कंप मच गया। मराठों ने मुगलों के पहरेदारों को चुपचाप मौत के घाट उतार दिया। शिवाजी महाराज सीधे शाइस्ता खान के शयनकक्ष की ओर बढ़े। खान घबराकर खिड़की से कूदकर भागने की कोशिश करने लगा। जैसे ही वह खिड़की से कूद रहा था, शिवाजी महाराज की चमचमाती तलवार की एक काट खान के हाथ पर पड़ी। शाइस्ता खान की जान तो बच गई, लेकिन उसकी **तीन उंगलियां** कटकर वहीं गिर गईं। खान का बेटा अबुल फतह और कई मुगल अधिकारी इस हमले में मारे गए।

पूरी मुगल सेना भ्रमित हो गई कि हमला किधर से हुआ है। शिवाजी और उनके मावल सुरक्षित सिंहगढ़ किले की ओर वापस लौट गए। इस घटना से औरंगज़ेब को इतनी गहरी मानसिक चोट लगी कि उसने शाइस्ता खान को अपमानित करके तुरंत बंगाल ट्रांसफर कर दिया। मुगलों की अपराजेयता का मिथक एक बार फिर चकनाचूर हो चुका था।

अध्याय 8

सूरत पर हमला: मुगलों की आर्थिक रीढ़ पर प्रहार

शाइस्ता खान के तीन साल के आक्रमण के कारण पुणे और स्वराज की अर्थव्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी थी। खेती नष्ट हो गई थी और प्रजा दाने-दाने को मोहताज थी। शिवाजी महाराज जानते थे कि राजकोष को दोबारा भरने और अपनी सेना को मजबूत करने के लिए भारी धन की आवश्यकता थी। वे इसके लिए अपनी गरीब प्रजा पर टैक्स का बोझ नहीं डालना चाहते थे। इसलिए उन्होंने मुगलों के सबसे अमीर और सबसे सुरक्षित व्यापारिक केंद्र—**सूरत** को निशाना बनाने का फैसला किया।

सूरत उस समय मुगलों का 'सोने का छत्ता' (The Storehouse of Gold) था। वहां से हज के लिए जाने वाले जहाज रवाना होते थे और पूरी दुनिया (यूरोप, अरब, चीन) के व्यापारी वहां व्यापार करते थे। सूरत के मुगल गवर्नर इनायत खान के पास एक बड़ी सेना थी, लेकिन वह एक भ्रष्ट और कायर इंसान था।

> "शिवाजी का सूरत पर हमला कोई साधारण लूट नहीं थी, बल्कि यह मुगलों द्वारा स्वराज पर किए गए अत्याचारों का हर्जाना वसूलना था।"
>
> **— पुर्तगाली गवर्नर एंटोनियो डी मेलो (1664 की रिपोर्ट)**

6 से 10 जनवरी 1664: आर्थिक युद्ध

बहिर्जी नाईक ने सूरत की ऐसी खुफिया जानकारी निकाली कि मुगल गवर्नर को भनक तक नहीं लगी। शिवाजी महाराज 4,000 घुड़सवारों के साथ बिजली की गति से सूरत पहुंचे। जैसे ही मराठों के आने की खबर मिली, गवर्नर इनायत खान सूरत के किले में जाकर छिप गया और पूरी जनता को बेसहारा छोड़ दिया।

शिवाजी महाराज ने लगातार चार दिनों तक सूरत के केवल अमीर मुगल व्यापारियों और सरकारी खजाने को लूटा। उन्होंने स्पष्ट आदेश जारी किए थे कि किसी भी गरीब, महिला, बच्चे, चर्च, मस्जिद या ब्रिटिश/डच फैक्ट्रियों को हाथ नहीं लगाया जाएगा (जब तक कि वे स्वयं हमला न करें)। डच और ब्रिटिश रिकॉर्ड बताते हैं कि शिवाजी ने केवल उन्हीं लोगों से धन लिया जो मुगलों को टैक्स देते थे। इस अभियान से स्वराज को लगभग **एक करोड़ रुपये** से अधिक की नकद राशि और आभूषण प्राप्त हुए। इस धन से शिवाजी महाराज ने अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया और सह्याद्रि के किलों को और मजबूत बनाया। औरंगज़ेब के लिए यह केवल आर्थिक नुकसान नहीं था, बल्कि उसके शाही स्वाभिमान पर करारा तमाचा था।

अध्याय 9

आगरा से महान पलायन: मौत के मुंह से चमत्कारी वापसी

सूरत की लूट से बौखलाए औरंगज़ेब ने अपने सबसे चतुर और शक्तिशाली राजपूत कमांडर **मिर्जा राजा जयसिंह** को एक विशाल सेना के साथ दक्षिण भेजा। जयसिंह ने अपनी कूटनीति से शिवाजी को चारों ओर से घेर लिया और मजबूरन जून 1665 में **'पुरंदर की संधि'** हुई, जिसके तहत शिवाजी महाराज को अपने 23 किले मुगलों को देने पड़े। राजा जयसिंह ने बड़ी चतुराई से शिवाजी महाराज को औरंगज़ेब से मिलने के लिए आगरा जाने के लिए राजी किया, यह आश्वासन देकर कि वहां उनका उचित सम्मान होगा और उन्हें दक्कन का सूबेदार बनाया जाएगा।

12 मई 1666 को शिवाजी महाराज अपने 9 वर्षीय पुत्र संभाजी राजे और कुछ वफादार सैनिकों के साथ आगरा में औरंगज़ेब के दरबार (दीवान-ए-खास) पहुंचे। औरंगज़ेब का 50वां जन्मदिन मनाया जा रहा था। लेकिन औरंगज़ेब ने जानबूझकर शिवाजी महाराज को तीसरी श्रेणी के सरदारों (5000-मंसबदारों) की कतार में खड़ा कर दिया, जो कि शाइस्ता खान के पीछे थी।

> "शेर कभी भेड़ियों की कतार में खड़ा नहीं हो सकता। औरंगज़ेब ने शिवाजी का नहीं, बल्कि पूरे दक्कन के स्वाभिमान का अपमान किया था।"
>
> **— समकालीन फारसी इतिहासकार खाफी खान ('मुंतखाब-उल-लुबाब')**

दरबार में विद्रोह और नजरबंदी

अपने स्वाभिमान को ठेस पहुंचता देख 36 वर्षीय शिवाजी महाराज दरबार में ही औरंगज़ेब के सामने गरज उठे। उन्होंने गुस्से में कहा कि वे इस अपमान को स्वीकार नहीं करेंगे और दरबार छोड़कर बाहर चले गए। औरंगज़ेब के दरबार में आज तक किसी की ऐसी हिम्मत नहीं हुई थी कि वह सम्राट के सामने आवाज उठा सके। औरंगज़ेब ने तुरंत आदेश देकर शिवाजी महाराज को आगरा के **'जयपुर भवन'** में नजरबंद (House Arrest) कर दिया और बाहर 5,000 कड़े पहरेदार तैनात कर दिए, जिनका कमांडर फौलाद खान था। औरंगज़ेब शिवाजी की हत्या करने की साजिश रच रहा था।

मिठाई के टोकरे और चमत्कारी रिहाई (17 अगस्त 1666)

मौत के इस जाल से निकलने के लिए शिवाजी महाराज ने बीमारी का नाटक शुरू किया। उन्होंने कहा कि उनके पेट में भयानक दर्द है। डॉक्टरों को बुलाया गया। कुछ दिनों बाद उन्होंने घोषणा की कि वे अपनी बीमारी से मुक्ति के लिए आगरा के साधु-संतों, ब्राह्मणों

और गरीबों को मिठाई और फल बांटना चाहते हैं। पहले तो पहरेदारों ने मिठाई के विशाल टोकरों की गहन तलाशी ली, लेकिन जब यह सिलसिला हफ्तों तक रोज चलने लगा, तो पहरेदार ऊब गए और उन्होंने तलाशी लेना बंद कर दिया।

17 अगस्त 1666 की शाम को इतिहास का सबसे बड़ा चमत्कार हुआ। शिवाजी महाराज और संभाजी राजे दो टोकरों में बैठ गए। उनके हमशक्ल भाई **हीरोजी फरजंद** ने शिवाजी की अंगूठी पहनकर उनके बिस्तर पर सोने का नाटक किया और वफादार **मदारी मेहतर** उनके पैर दबाता रहा। जब तक पहरेदारों को पता चला कि बिस्तर पर सोया व्यक्ति शिवाजी नहीं बल्कि कोई और है, तब तक शिवाजी महाराज आगरा की सीमा से मीलों दूर निकल चुके थे।

पकड़े जाने से बचने के लिए शिवाजी ने सीधे पुणे का रास्ता नहीं चुना। वे उत्तर-पूर्व की ओर मथुरा, इलाहाबाद, वाराणसी, पुरी और गोलकुंडा होते हुए साधु के भेष में लगभग 25 दिन बाद सुरक्षित महाराष्ट्र वापस लौट आए। जब राजमाता जीजाबाई ने अपने शिवा को जीवित देखा, तो उनकी आंखों से आंसू बह निकले। इस भागने की घटना ने औरंगज़ेब को जीवनभर के लिए मानसिक रूप से तोड़ दिया। अपनी मृत्यु शैय्या पर लिखे पत्र में औरंगज़ेब ने स्वीकार किया था: "मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती शिवाजी को अपनी कैद से भागने देना था। उसी एक गलती ने मेरे साम्राज्य के पतन का रास्ता साफ किया।"

अध्याय 10

छत्रपति का राज्याभिषेक: संप्रभु राष्ट्र का उदय

आगरा से लौटने के बाद शिवाजी महाराज ने मुगलों को दिए गए सभी 23 किलों को दोबारा जीत लिया। अब तक वे महाराष्ट्र के निर्विवाद शासक बन चुके थे, लेकिन तकनीकी रूप से मुस्लिम सुल्तानों और मुगलों के दस्तावेजों में उन्हें केवल एक 'बागी' (विद्रोही), 'जमींदार' या 'डाकू' ही कहा जाता था। स्थानीय राजपूत और अन्य मराठा सरदार भी उन्हें अपने बराबर का ही मानते थे और उनकी संप्रभुता को पूरी तरह स्वीकार करने में हिचकिचाते थे। इसलिए, स्वराज को एक कानूनी, धार्मिक और अंतरराष्ट्रीय मान्यता देने के लिए शिवाजी महाराज का **राज्याभिषेक (Coronation)** होना अत्यंत आवश्यक था।

6 जून 1674 (ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी, शके 1596) को रायगढ़ दुर्ग पर भारतीय इतिहास का सबसे भव्य राज्याभिषेक समारोह संपन्न हुआ। काशी के प्रकांड विद्वान **गागाभट्ट** ने इस समारोह का नेतृत्व किया। भारत की सात पवित्र नदियों के जल से शिवाजी महाराज का अभिषेक किया गया।

> "सत्रहवीं शताब्दी के अंधकार में, जब भारत के सभी प्राचीन राजवंश समाप्त हो चुके थे, रायगढ़ पर छत्रपति का सिंहासन केवल एक राजा का राज्याभिषेक नहीं था, बल्कि यह पूरे देश के सांस्कृतिक और राजनीतिक पुनरुत्थान का प्रतीक था।"
>
> **— हेनरी ऑक्सेंडेन (अंग्रेज दूत, जो राज्याभिषेक में उपस्थित था)**

हिंदू पद पादशाही की स्थापना

शिवाजी महाराज ने 32 मन सोने के भव्य सिंहासन पर बैठकर **'छत्रपति'** (जिसके सिर पर छत्र हो), **'शककर्ता'** (एक नए युग की शुरुआत करने वाला), और **'हैन्दव धर्मोद्धारक'** (सनातन संस्कृति का रक्षक) की उपाधियां धारण कीं। उन्होंने एक नया कैलेंडर 'राज्याभिषेक शक' शुरू किया और स्वराज की अपनी सोने और तांबे की मुद्राएं (शिवराई और होन) जारी कीं।

इस राज्याभिषेक के बाद ही 'हिंदू पद पादशाही' की औपचारिक स्थापना हुई। अब स्वराज केवल एक विद्रोही इलाका नहीं था, बल्कि एक संप्रभु, स्वतंत्र और शक्तिशाली राष्ट्र बन चुका था जिसे दुनिया की कोई भी ताकत नजरअंदाज नहीं कर सकती थी। जीजाबाई का सपना पूरा हो चुका था, और इस ऐतिहासिक घटना के मात्र 11 दिन बाद, अपनी जीवन यात्रा को सफल मानकर राजमाता जीजाबाई ने महाप्रयाण किया।

अध्याय 11

किले और सेना: सह्याद्रि के अभेद्य रक्षक

छत्रपति शिवाजी महाराज के साम्राज्य का मूल आधार उनके किले थे। उनके पास अपने जीवन के अंत तक लगभग **360 से अधिक किले** थे। शिवाजी महाराज किलों के निर्माण और प्रबंधन में एक महान सैन्य जीनियस थे। उनका मानना था कि एक मजबूत किला एक लाख सैनिकों के बराबर होता है। उनके शासनकाल में किलों के भीतर का अनुशासन इतना कड़ा था कि समकालीन विदेशी भी आश्चर्यचकित रह जाते थे।

प्रत्येक किले की सुरक्षा के लिए एक त्रिकोणीय प्रशासनिक ढांचा तैयार किया गया था ताकि कोई भी अधिकारी गद्दारी न कर सके:

- **किलेदार/हवलदार:** यह आमतौर पर एक मराठा होता था, जिसके पास किले की मुख्य सैन्य कमान और दरवाजों की सुरक्षा की जिम्मेदारी होती थी।
- **सबनीस:** यह आमतौर पर एक ब्राह्मण होता था, जो किले के एकाउंट्स, पत्राचार और रसद (Supplies) का हिसाब रखता था।
- **कारखानीस:** यह आमतौर पर एक प्रभु (कायस्थ) होता था, जो किले के भीतर खाद्यान्न, बारूद, तोपों की मरम्मत और ईंधन के भंडारण के लिए जिम्मेदार था।

सैन्य अनुशासन (Military Discipline)

शिवाजी महाराज की सेना का अनुशासन पूरी दुनिया में बेजोड़ था। मुगलों की सेना जहां विलासिता, नर्तकियों, शराब और औरतों के तंबू के साथ चलती थी, वहीं मराठा सेना में निम्नलिखित कड़े नियम लागू थे:

1. सैन्य अभियानों के दौरान किसी भी सैनिक को अपने साथ महिलाओं, नर्तकियों या दास-दासियों को ले जाने की सख्त मनाही थी। इस नियम का उल्लंघन करने वाले को सीधे **मृत्युदंड** दिया जाता था।
2. युद्ध में जीती गई हर एक छोटी से छोटी वस्तु (सोना, चांदी, कपड़े, अनाज) को सेना के शाही खजाने में जमा करना अनिवार्य था। कोई भी सैनिक व्यक्तिगत लूट नहीं रख सकता था।
3. युद्ध के दौरान यदि किसी दुश्मन सैनिक की पत्नी या बेटी हाथ लगती थी, तो उसे मां-बहन के समान आदर देकर सुरक्षित उसके परिवार के पास वापस भेजा जाता था।

कल्याण के सूबेदार की बहू की ऐतिहासिक घटना

जब मराठा सेनापति आबाजी सोनदेव ने कल्याण के गवर्नर की अत्यंत सुंदर बहू को बंदी बनाकर शिवाजी महाराज के सामने उपहार स्वरूप पेश किया, तो शिवाजी महाराज आसन से उठ खड़े हुए। उन्होंने उस महिला को देखकर कहा: "काश! मेरी मां जीजाबाई भी आपकी तरह सुंदर होतीं, तो मैं भी आपके जैसा ही सुंदर पैदा हुआ होता।" उन्होंने आबाजी सोनदेव को कड़ी फटकार लगाई और उस महिला को साड़ी-चोली भेंट कर ससम्मान पालकी में बिठाकर वापस भिजवा दिया। यह चरित्र ही शिवाजी को 'देवता' बनाता था।

अध्याय 12

प्रशासन और शासन: अष्टप्रधान मंडल और लोककल्याणकारी नीतियां

शिवाजी महाराज केवल युद्ध जीतने वाले राजा नहीं थे, बल्कि वे एक अत्यंत कुशल और आधुनिक सोच वाले प्रशासक थे। उन्होंने मध्यकालीन भारत की सामंतवादी और शोषक व्यवस्था को खत्म कर एक सुव्यवस्थित **अष्टप्रधान मंडल (مجلسِ ثمن / Council of Eight Ministers)** का गठन किया। इस व्यवस्था में हर मंत्री सीधे छत्रपति के प्रति जवाबदेह था और किसी भी पद को वंशानुगत (Hereditary) नहीं बनाया गया था; योग्यता ही एकमात्र पैमाना थी।

पद का नाम	संस्कृत नाम	मुख्य प्रशासनिक कार्य और जिम्मेदारी
प्रधान	पेशवा	साम्राज्य का मुख्य कार्यकारी अधिकारी, राजा की अनुपस्थिति में प्रशासन संभालना।
अमात्य	मजूमदार	वित्त मंत्री (Finance Minister), साम्राज्य के आय-व्यय का पूरा हिसाब रखना।
सचिव	सुरनीस	शाही पत्रों और आदेशों को तैयार करना तथा उनकी भाषा की शुद्धता देखना।
मंत्री	वाकनीस	गृह मंत्री (Home/Intelligence), राजा की सुरक्षा और गुप्तचर विभाग का समन्वय।
सेनापति	सरनौबत	रक्षा मंत्री (Defense Minister), सेना की भर्ती, प्रशिक्षण और युद्ध का नेतृत्व।
सुमंत	दबीर	विदेश मंत्री (Foreign Minister), अन्य राज्यों और विदेशी ताकतों से कूटनीतिक संबंध।
न्यायाधीश	न्यायाधीश	मुख्य न्यायाधीश (Chief Justice), नागरिक और सैन्य मामलों में न्याय प्रदान करना।
पंडित राव	दानाध्यक्ष	धार्मिक मामलों के प्रमुख, दान, त्योहारों और सांस्कृतिक कार्यों का प्रबंधन।

कृषि और भूमि सुधार (Farmers First Policy)

शिवाजी महाराज जानते थे कि भारत की आत्मा गांवों और किसानों में बसती है। उन्होंने मध्यस्थों (जमींदारों और वतनदारों) द्वारा किसानों के शोषण को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया। सरकार सीधे किसानों से संपर्क करती थी। उन्होंने भूमि की वैज्ञानिक पैमाइश (Measurement) कराई और कर की दरें निश्चित कीं। यदि किसी वर्ष सूखा पड़ता या फसल नष्ट हो जाती, तो किसानों का कर पूरी तरह माफ कर दिया जाता था और सरकार की ओर से उन्हें बीज और बैल खरीदने के लिए बिना ब्याज के कर्ज (तकावी) दिया जाता था।

धार्मिक सहिष्णुता की अद्भुत मिसाल

यद्यपि शिवाजी महाराज ने 'हिंदवी स्वराज' की स्थापना की थी, लेकिन उनका राज्य किसी भी धर्म के प्रति द्वेष पर आधारित नहीं था। उनकी सेना और प्रशासन में कई उच्च पदों पर मुस्लिम अधिकारी आसीन थे। उनके मुख्य नौसैनिक कमांडरों में से एक **दरिया सारंग (दौलत खान)** थे, और उनके मुख्य तोपची **इब्राहिम खान** थे। जब शिवाजी आगरा गए थे, तो उनके साथ गए वफादार सहायकों में मदारी मेहतर (मुस्लिम) शामिल थे।

समकालीन कट्टर विरोधी इतिहासकार खाफी खान ने भी अपनी पुस्तक में लिखा है: "शिवाजी ने कड़े नियम बनाए थे कि जब भी उनके सैनिक किसी शहर को लूटें, तो वे किसी भी मस्जिद को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। यदि युद्ध में पवित्र कुरान की कोई प्रति मराठों के हाथ लगती थी, तो वे उसे अत्यंत सम्मानपूर्वक अपने किसी मुस्लिम सैनिक या मौलवी को सौंप देते थे।"

अध्याय 13

शिवाजी का व्यक्तित्व: चारित्रिक श्रेष्ठता और आधुनिक दृष्टि

छत्रपति शिवाजी महाराज का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक ही समय में एक कठोर सैनिक, एक कोमल हृदय प्रजापालक, एक चतुर कूटनीतिज्ञ और एक परम संत थे। उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता थी—**उनकी नैतिक शुद्धता**। मध्यकाल में राजाओं के अंतःपुर (Harem) सैकड़ों रानियों और दासियों से भरे होते थे, और विलासिता ही उनका मुख्य जीवन थी। लेकिन शिवाजी महाराज का जीवन एक सन्यासी की भांति अनुशासित था। वे पर-स्त्री को साक्षात माता मानते थे।

शिवाजी महाराज की दूरदर्शिता केवल उनके समय तक सीमित नहीं थी। वे आधुनिक भारत के पहले ऐसे शासक थे जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण (Environmental Protection) पर विशेष ध्यान दिया। उनके द्वारा जारी किए गए शाही आज्ञापत्रों में स्पष्ट लिखा था कि स्वराज के किलों या जहाजों के निर्माण के लिए कभी भी आम, बरगद या फलदार वृक्षों को नहीं काटा जाएगा। लकड़ी की आवश्यकता के लिए केवल सागौन के जंगलों का विवेकपूर्ण उपयोग करने की अनुमति थी।

> "शिवाजी केवल मराठों के राजा नहीं थे। वे पूरे भारतवर्ष के स्वाभिमान थे। उनका चरित्र इतना शुद्ध था कि उनके कट्टर दुश्मन भी पीठ पीछे उनकी प्रशंसा करने को मजबूर थे।"
>
> **— स्वामी विवेकानंद (कोलकाता व्याख्यान से)**

भाषा और संस्कृति का पुनरुद्धार

मुगलों और सुल्तानों के सदियों के शासन के कारण भारत की प्रशासनिक भाषा पूरी तरह फारसी और अरबी बन चुकी थी। मराठी और संस्कृत शब्द गायब हो रहे थे। शिवाजी महाराज ने इस सांस्कृतिक गुलामी को पहचानते हुए रघुनाथ पंडित पंत के नेतृत्व में एक विशाल ग्रंथ **'राज्य व्यवहार कोष'** तैयार कराया। इस कोष के जरिए प्रशासनिक कार्यों से फारसी शब्दों को हटाकर उनके स्थान पर संस्कृत और मराठी के शुद्ध शब्दों को प्रतिस्थापित किया गया (जैसे 'वज़ीर' के स्थान पर 'प्रधान', 'किला' के स्थान पर 'दुर्ग')।

अध्याय 14

अंतिम दिन: महाप्रयाण और राष्ट्र का शोक

सन 1680 की शुरुआत तक छत्रपति शिवाजी महाराज का स्वास्थ्य लगातार गिर रहा था। जीवनभर सह्याद्रि के कड़े पहाड़ों पर दिन-रात घोड़े की पीठ पर बिताने, अंतहीन युद्ध अभियानों और मानसिक तनाव के कारण उनका शरीर थक चुका था। अंतिम समय में उन्हें स्वराज के भविष्य और अपने बड़े पुत्र संभाजी राजे के उग्र स्वभाव को लेकर भी कुछ चिंताएं थीं, जिन्हें कुछ स्वार्थी मंत्रियों ने गलतफहमियों में बदल दिया था।

मार्च 1680 के अंत में उन्हें तेज बुखार (पेचिश और रक्त-अतिसार) ने जकड़ लिया। रायगढ़ दुर्ग के डॉक्टरों ने हर संभव प्रयास किया, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। **3 अप्रैल 1680 (चैत्र पूर्णिमा)** के दिन, दोपहर के समय, मात्र 50 वर्ष की आयु में इस महान युगपुरुष ने अपनी आंखें हमेशा के लिए मूंद लीं। सह्याद्रि का वह शेर, जिसने कभी किसी के सामने घुटने नहीं टेके, अनंत काल की नींद में सो गया।

> "आज पृथ्वी का एक सबसे चमकीला सितारा डूब गया। भारत मां ने अपना वह बेटा खो दिया जिसने उसे दोबारा मुस्कुराना सिखाया था।"
>
> **— रायगढ़ से ब्रिटिश दूत की रिपोर्ट (लंदन भेजी गई)**

पूरे राष्ट्र में शोक की लहर

जब शिवाजी महाराज के महाप्रयाण की खबर रायगढ़ से नीचे पहुंची, तो पूरे महाराष्ट्र में हाहाकार मच गया। किसान खेतों में रोने लगे, सैनिकों ने अपनी तलवारें जमीन पर रख दीं, और किलों के पत्थरों से भी जैसे उदासी टपकने लगी। जब दिल्ली में औरंगज़ेब को यह खबर मिली, तो वह कुछ पल के लिए स्तब्ध रह गया। अपनी आदत के विपरीत, उसने अपने दरबार में खड़े होकर कहा:

"वह एक महान राजा था। मैंने बीस वर्षों तक उसकी शक्ति को कुचलने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी, लेकिन वह लगातार अपनी सीमाओं को बढ़ाता गया। वह अकेला ऐसा शासक था जिसने अपने सैनिकों में इतना ऊंचा चरित्र और अनुशासन पैदा किया।"

अध्याय 15

शिवाजी महाराज की विरासत: अखंड भारत की प्रेरणा

छत्रपति शिवाजी महाराज का भौतिक शरीर भले ही पंचतत्व में विलीन हो गया, लेकिन उनके द्वारा जलाई गई 'स्वराज' की चिंगारी एक महाज्वालामुखी बन चुकी थी। औरंगज़ेब को लगा था कि शिवाजी की मृत्यु के बाद मराठे बिखर जाएंगे। उसने सन 1681 में अपनी पांच लाख की विशाल सेना और पूरे शाही खजाने के साथ खुद दक्कन में डेरा डाल दिया। उसका विचार था कि वह कुछ ही महीनों में पूरे दक्षिण को जीत लेगा।

लेकिन शिवाजी महाराज ने अपनी प्रजा के दिलों में स्वतंत्रता का जो बीज बोया था, वह इतना मजबूत था कि छत्रपति संभाजी महाराज, छत्रपति राजाराम महाराज और महारानी ताराबाई के नेतृत्व में मराठों ने मुगलों के खिलाफ 27 वर्षों तक एक अभूतपूर्व **'जन-युद्ध' (War of Independence)** लड़ा। औरंगज़ेब 25 वर्षों तक भटकता रहा और अंततः 1707 में दक्कन की इसी मिट्टी (अहमदनगर) में दफन हो गया। मुगलों का पतन हो गया, और अठारहवीं शताब्दी में बाजीराव पेशवा के नेतृत्व में मराठा साम्राज्य का भगवा ध्वज अटक (वर्तमान पाकिस्तान) से कटक (ओडिशा) तक पूरे भारत में लहराया।

> "यदि शिवाजी न होते, तो आज भारत की संस्कृति और धार्मिक पहचान पूरी तरह बदल चुकी होती। वे केवल मराठों के नहीं, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के जीवनदाता थे।"
>
> **— महाकवि भूषण ('शिवराज भूषण' ग्रंथ से)**

भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा

शिवाजी महाराज की नीतियां और युद्ध कला आने वाली सदियों तक भारत के स्वतंत्रता संग्राम की मार्गदर्शक बनीं। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बाल गंगाधर तिलक ने युवाओं में राष्ट्रभक्ति जगाने के लिए **'शिवाजी उत्सव'** की शुरुआत की। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 'आजाद हिंद फौज' के सैनिकों के लिए शिवाजी महाराज की गुरिल्ला युद्ध नीति ही मुख्य प्रेरणा थी। आज भी भारतीय सेना की 'मराठा लाइट इन्फैंट्री' युद्ध के मैदान में **"छत्रपति शिवाजी महाराज की जय"** के उद्घोष के साथ दुश्मनों पर टूट पड़ती है। शिवाजी महाराज कोई अतीत का चरित्र नहीं हैं, वे भारत का शाश्वत वर्तमान और भविष्य हैं।

विशेष खंड: कालक्रम और महत्वपूर्ण तथ्य

छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन का कालक्रम (Timeline)

वर्ष (ईस्वी)	ऐतिहासिक घटनाक्रम
19 फरवरी 1630	शिवनेरी दुर्ग पर शिवाजी महाराज का जन्म।
1645	रायरेश्वर महादेव मंदिर में 'हिंदवी स्वराज' की ऐतिहासिक शपथ।
1646	तोरण दुर्ग पर विजय प्राप्त कर स्वराज का पहला भगवा ध्वज लहराया।
10 नवंबर 1659	प्रतापगढ़ की तलहटी में क्रूर सेनापति अफजल खान का वध।
5 अप्रैल 1663	पुणे के लाल महल में घुसकर शाइस्ता खान पर सर्जिकल स्ट्राइक।
जनवरी 1664	मुगलों के समृद्ध व्यापारिक केंद्र सूरत पर पहला सफल हमला।
जून 1665	मिर्जा राजा जयसिंह के साथ 'पुरंदर की संधि' का ऐतिहासिक समझौता।
17 अगस्त 1666	आगरा में औरंगज़ेब की कैद (जयपुर भवन) से चमत्कारी रूप से पलायन।
6 जून 1674	रायगढ़ दुर्ग पर गागाभट्ट द्वारा विधिवत राज्याभिषेक और 'छत्रपति' की उपाधि।
1677-1678	दक्षिण दिग्विजय अभियान (कर्नाटक, जिंजी और तंजावुर की विजय)।
3 अप्रैल 1680	रायगढ़ दुर्ग पर महाप्रयाण (मृत्यु) और राष्ट्रव्यापी शोक।

शिवाजी महाराज के 20 अमर प्रेरणादायक विचार (Inspirational Quotes)

1. "स्वतंत्रता एक ऐसा वरदान है, जिसे पाने का अधिकार हर इंसान को है, लेकिन इसे बनाए रखने के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है।"
2. "जब हौसले बुलंद हों, तो पहाड़ भी एक मिट्टी का ढेर नजर आता है।"
3. "शत्रु को कभी कमजोर मत समझो, लेकिन अपने साहस पर कभी संदेह भी मत करो।"
4. "यदि किसी कार्य का उद्देश्य लोककल्याण और धर्म की रक्षा है, तो स्वयं ईश्वर भी आपकी सहायता के लिए आगे आते हैं।"
5. "एक सच्चे शासक की पहचान उसकी जीत में नहीं, बल्कि उसकी प्रजा की आंखों में दिखने वाली सुरक्षा और सम्मान में होती है।"
6. "प्रतिशोध की आग में जलने से बेहतर है कि हम अपनी शक्ति का उपयोग न्याय और निर्माण में करें।"
7. "स्त्री का सम्मान केवल एक समाज का कर्तव्य नहीं, बल्कि किसी भी राष्ट्र की संस्कृति की पहली कसौटी है।"
8. "रणभूमि में केवल तलवारें नहीं लड़तीं, बल्कि योद्धा का अटूट विश्वास और उसकी रणनीति जीत हासिल करती है।"
9. "गुलामी की मखमली बेड़ियों से स्वतंत्रता के नुकीले कांटे हजार गुना बेहतर हैं।"
10. "जो राजा अपनी सेना में कड़ा अनुशासन नहीं रख सकता, उसका साम्राज्य ताश के पत्तों की तरह ढह जाता है।"
11. "समुद्र पर जिसका नियंत्रण है, वही वास्तविक संप्रभु है। हमें अपनी सीमाएं जल और थल दोनों में सुरक्षित करनी होंगी।"
12. "वतनदारों का स्वार्थ राष्ट्र की अखंडता का सबसे बड़ा दुश्मन होता है।"
13. "इतिहास गवाह है कि जो कौम अपनी संस्कृति और आत्मसम्मान को भूल जाती है, वह बहुत जल्द नक्शे से मिट जाती है।"
14. "भाग्य भी उसी का साथ देता है जो संकट के समय हाथ पर हाथ धरे बैठने के बजाय कर्म की तलवार उठाता है।"
15. "क्रोध में लिया गया निर्णय हमेशा विनाश की ओर ले जाता है; कूटनीति और संयम ही संकट के सच्चे साथी हैं।"
16. "मेरे स्वराज में ऊंच-नीच या जाति का कोई स्थान नहीं है; जो राष्ट्र के लिए पसीना बहा सकता है, वही मेरा भाई है।"
17. "किले केवल पत्थरों की दीवारें नहीं हैं, वे हमारी स्वतंत्रता के जीवंत रक्षक हैं।"
18. "दुश्मन की संख्या कितनी भी अधिक क्यों ना हो, यदि आपकी युद्ध नीति सटीक है तो विजय निश्चित है।"
19. "सच्चा योद्धा वह नहीं जो कभी न गिरे, बल्कि वह है जो हर बार गिरकर और अधिक शक्ति से खड़ा हो।"
20. "हिंदवी स्वराज का अर्थ केवल सत्ता का परिवर्तन नहीं, बल्कि इस भूमि के हर शोषित को न्याय और गरिमा प्रदान करना है।"

ऐतिहासिक तथ्य बनाम मिथक (Facts vs Myths)

प्रचलित मिथक (Myth)	ऐतिहासिक तथ्य (Historical Fact)
शिवाजी महाराज केवल मराठों के या एक विशेष जाति के राजा थे।	**तथ्य:** शिवाजी महाराज ने 'हिंदवी स्वराज' की स्थापना की थी, जो सभी भारतीय समुदायों के लिए था। उनकी सेना में अठारह पगड जातियों (सभी पिछड़ी और शोषित जातियों) के लोग शामिल थे।
शिवाजी महाराज इस्लाम विरोधी या मुस्लिमों के दुश्मन थे।	**तथ्य:** वे केवल विदेशी अत्याचारी आक्रांताओं के विरोधी थे। उनकी अपनी सेना में एक-तिहाई से अधिक मुस्लिम सैनिक और शीर्ष कमांडर थे। उन्होंने कभी किसी मस्जिद को नहीं तोड़ा, बल्कि मस्जिदों को अनुदान दिए।
वे केवल एक गुरिल्ला लुटेरे थे जो अचानक किलों को लूटते थे।	**तथ्य:** वे एक महान राष्ट्र-निर्माता और कुशल विधिक प्रशासक थे। उन्होंने अष्टप्रधान मंडल, नौसेना और एक जटिल कर प्रणाली बनाई थी, जो उस समय के किसी भी यूरोपीय देश से अधिक उन्नत थी।